॥ ओ३म् ॥

भारत स्वाभिमान

(बीमारी, बुराई व भ्रष्टाचार से मुक्त स्वस्थ, संस्कारवान् व शक्तिशाली भारत के निर्माण का आन्दोलन)

भारत स्वाभिमान के मुख्य तीन लक्ष्य

1. आर्थिक भ्रष्टाचार समाप्त करके विदेशों में जमा देश का लगभग 258 लाख करोड़ रुपये व देश में जमा लगभग 60 लाख करोड़ रुपये के काले धन को देश की अर्थ-व्यवस्था में सम्मिलित करके उसको राष्ट्र के विकास में लगवाना व कालेधन की अर्थ-व्यवस्था को हमेशा के लिए खत्म करना।
2. भ्रष्टाचार, बलात्कार, दहेजहत्या, गोहत्या, आतंकवाद व मिलावट करने वालों के खिलाफ मृत्युदण्ड का कानून बनवाकर 115 करोड़ भारतीयों को सुरक्षा प्रदान करवाना। इसके लिए देश में फास्ट ट्रेक कोर्ट बनवाकर एक से तीन माह में तुरन्त न्याय की व्यवस्था करवाना, जिससे कि अपराधियों को तुरन्त दण्ड मिल सके और इन भ्रष्टाचार व बलात्कार आदि करने वालों के मृत्युदण्ड के कानून को राष्ट्रपति के क्षमादान के अधिकार से मुक्त करवाना।
3. भारत को लूटने, अत्याचार करने व शोषण करके सदा गुलाम बनाकर रखने के लिए अंग्रेजों द्वारा बनाई गई समस्त कुटिल-नीतियों भ्रष्ट-राजनैतिक व प्रशासनिक-व्यवस्था का राष्ट्रहित में पूर्ण-परिवर्तन करवाना तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून, अर्थ व कृषि व्यवस्थादि का पूर्ण भारतीयकरण या स्वदेशीकरण करवाना।

तीन लक्ष्य पाने का उपाय- सदस्यता अभियान

काले धन की अर्थ-व्यवस्था को खत्म करने, भ्रष्टाचार व बलात्कार आदि को मिटाने के लिए कानून बनाने व व्यवस्था को चलाने तथा नीतियों के बनाने का एकमात्र अधिकार मुख्यरूप से देश की लोकसभा या संसद को ही है। अत: लोकसभा में 626 जिलों से 543 ऐसे सांसद चुनकर भेजना जो इन तीनों कामों को करें।

इसके लिए-एक जिले से भारत स्वाभिमान के औसत 7 से 10 लाख-सदस्य तैयार करना जो आगामी लोकसभा चुनाव में केवल उन्हीं को लोकसभा सदस्य चुनकर भेजेंगे जो उपरोक्त तीन कामों को पूरा करेंगे। सत्ता व व्यवस्था-परिवर्तन करके भ्रष्टाचार से मुक्त भारत बनाने के साथ-साथ सभी सदस्यों को हम योग के द्वारा रोग, नशा (शराब, तम्बाकू आदि) व अन्य सामाजिक बुराईयों से मुक्त बनाकर एक आदर्श नागरिक बनायेंगे। सभी सदस्यों में कर्त्तव्य पारायणता व राष्ट्रीयता के भाव भरकर भारत को विश्व का एक आदर्श व शक्तिशाली राष्ट्र बनायेंगे। रोग, नशा व भ्रष्टाचार से मुक्त आदर्श व्यक्ति, गाँव, तहसील, जिला, समाज व आदर्श राष्ट्र का निर्माण करना हमारा ध्येय है। जो गाँव 90 से 100 प्रतिशत् योगमय, रोग-नशा व सामाजिक बुराइयों से मुक्त होगा, स्वस्थ, स्वच्छ, स्वावलम्बी व संस्कारवान होगा वह हमारे आदर्श गाँव की श्रेणी में होगा।

भ्रष्टाचार से मुक्त भारत कैसा होगा ?

1. काले धन की अर्थ-व्यवस्था के समाप्त होते ही देश की अर्थ-व्यवस्था में लगभग 300 लाख करोड़ रुपये से अधिक अतिरिक्त धन सम्मिलित हो जायेगा। देश की GDP (ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्ट-सकल घरेलु उत्पाद) लगभग 350 लाख करोड़ रुपये से अधिक व विकासदर लगभग 20 हो जायेगी और संक्षेप में 2020 तक भारत विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति के रूप में खड़ा हो जायेगा अर्थात् अमेरिका की GDP जो आज 619 लाख करोड़ है, उससे भी अधिक भारत की GDP हो जायेगी। अभी भारत की GDP लगभग 55 लाख करोड़ रुपये है।
2. हम इस 300 लाख करोड़ रुपये को देश के लगभग 626 जिलों के विकास के लिए खर्च करवायेंगे इससे एक जिले को लगभग 50 हजार करोड़ रुपये विकास के लिए मिलेंगे और यदि एक जिलें में 500 गाँव हैं तो एक गाँव को विकास के लिए लगभग 100 करोड़ रुपये उपलब्ध होगें।
3. **बच्चों, युवाओं, प्रतिभाओं, पिछड़ों, दलितों, महादलितों, मजदूरों, व किसानों का भविष्य कैसा होगा?**
जब एक जिले में लगभग 50 हजार करोड़ रुपये अथवा एक-एक गाँव में लगभग 100 करोड़ रुपये कृषि, वर्षा जल के संरक्षण, सिंचाई, पेयजल की व्यवस्था, विविध प्रकार से जल-प्रबन्धन, कचरा-प्रबन्धन, पूरे सिस्टम का ऑटो-माइजेशन, ग्रामीण-विकास, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्व-विद्यालय, लघु उद्योग, ग्रामोद्योग व जिला-स्तर पर बड़े उद्योग, विद्युत-उत्पादन, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं सड़क-निर्माणादि के रूप में विकास कार्यो में खर्च होंगे तो पूरे देश का सम्पूर्ण विकास होगा और देश प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण-स्वावलम्बी बनेगा इससे करोड़ों लोगों को रोजगार व स्वावलम्बन मिलेगा और सब वर्ग, जाति, मजहब व प्रान्तवासियों को भरपूर काम-दाम-सम्मान व स्वाभिमान के साथ जीने का अधिकार मिलेगा और अन्त में सबको काम मिलने से आरक्षण जैसे विवादों को भी स्वत: ही समाधान हो जायेगा। प्रतिभावान् लोग देश में नए-नए शोध-अनुसंधान व तकनीकी के विकास का कार्य करके देश को आगे बढ़ायेंगे, देश की प्रतिभाओं का पलायन व अपमान नहीं होगा।

देश के सभी बेरोजगार युवकों, पूर्णरूप से या आंशिकरूप से बेरोजगारों अन्य लोगों व मजदूरों को न्यूनतम वेतनमान 10 हजार रुपये मासिक दिलवायेंगे व किसानों को उनकी उपज का पूरा मूल्य मिलने से सब समृद्ध होकर सम्मान व स्वाभिमान के साथ जी सकेंगे। सबको समान रूप से उच्च गुणवत्ता के साथ नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध हो जायेगी और देश में एक भी व्यक्ति न तो अनपढ़ रहेगा और न ही भूखा सोयेगा। संस्कारों व योगशिक्षा के साथ देश की भाषा में देश की शिक्षा-व्यवस्था होगी इससे सबको समान रूप से विकास का अवसर मिलेगा। अशिक्षा, अभाव, जनसंख्या की वृद्धि, गंदगी, भूख व नक्सलवाद आदि सभी समस्याओं के मूल में भ्रष्टाचार व विकास का अभाव ही है। इस आध्यात्मिक विकासवाद से देश की सभी समस्याओं का समाधान होगा।

लूट के स्रोत व प्रमाण

1. केन्द्र व राज्य सरकारों का देश की विकास-योजनाओं के लिए प्रतिवर्ष लगभग 20 लाख करोड़ रुपये से अधिक का बजट होता है विकास योजनाओं के इस धन को भ्रष्ट नेता, कुछ बेईमान अधिकारी व सरकारों द्वारा संरक्षित भ्रष्ट-व्यापारी हेरा-फेरी व चोरी करके 80 प्रतिशत् विकास योजनाओं का धन लूट लेते हैं इस बात को स्वर्गीय राजीव गाँधी ने भी स्वीकार किया था। हमें व्यवस्था-परिवर्तन में कालेधन की यात्रा का संशोधन करना है।
2. देश की लगभग 17 करोड़ हेक्टेयर जमीन सरकारों के नियंत्रण में है, इसको देशी-विदेशी बड़ी-बड़ी कम्पनियों को नि:शुल्क अथवा कोड़ियों के भाव लीज पर देकर या कब्जा करवा करके लाखों करोड़ रुपये का भ्रष्टाचार करते हैं।
3. देश की अकूत धन सम्पति कोयला, लोहा, सोना, चाँदी, हीरा, पन्ना, कीमती-पत्थर व अन्य बेशकीमती खनिजों की खदानों का कोड़ियों के भाव ठेका देकर लाखों करोड़ रुपये लूट लेते हैं। इसके साथ-2 कान्ट्रेक्ट-करेप्सन (कॉन्ट्रेक्ट आदि दिलवाने के नाम पर कमीशन या रिश्वत लेना) नौकरी लगवाने, तबादला करने के लिये व हर काम के बदले दाम लेकर हर वर्ष लाखों-करोड़ रुपये लूटे जाते हैं।
4. देश के कुछ ईमानदार व राष्ट्रभक्त नेताओं को छोड़कर अधिकांश शीर्ष राजनेता विदेशी सरकारों व विदेशी कम्पनियों के एजेन्ट की तरह कार्य करते हुए दिखाई देते हैं।

कालेधन की अर्थ-व्यवस्था का प्रमाण :-

स्विस बैंकों के साथ-साथ 60 से ज्यादा देशों में भारत का लगभग 258 लाख करोड़ रुपये जमा है तथा देश में जो लगभग 60 लाख करोड़ रुपये काला धन जमा है उसके पूरे दस्तावेज व प्रमाण उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए स्विटजरलैण्ड सरकार व स्विस बैंक, एसोसिएशन का काले धन के बारे में पूरी दुनियाँ को दी गई जानकारियाँ अथवा खुलासा, टैक्स जस्टिस नेटवर्क, ट्रान्सपेरेन्सी इन्टरनेशनल आदि से हमने विदेशी बैंकों में जमा ये 258 लाख करोड़ रुपये के कालेधन की जानकारी हासिल की है। ''नेशनल काउन्सिल फोर अप्लाइड इकोनोमिक रिसर्च'' तथा 40 से अधिक कमेटियाँ तो

स्वयं सरकार ने देश में काले-धन की अर्थ-व्यवस्था के अध्ययन के लिए बनाई है सभी कमेटियाँ एवं देश के सभी प्रमुख अर्थशास्त्री निर्विवादित रूप से देश की अर्थ-व्यवस्था में बराबर के कालेधन को स्वीकार करते हैं जो लगभग 60 लाख करोड़ रुपये है।

समाधान :-

1. स्विस बैंकों में जमा काले धन व अन्य लगभग 60 देशों में जमा काले-धन के बारे में पता लगाने के लिए, इन देशों में जाने वाले लोगों के बारे में दिल्ली में बने इन देशों के दूतावासों के द्वारा केन्द्र सरकार को विदेश मंत्रालय, गृह-मंत्रालय, रक्षा-मंत्रालय, प्रवर्तन निदेशालय केन्द्रीय सतर्कता आयोग एवं इमीग्रेशन विभाग आदि के माध्यम से की पूरी जानकारी उपलब्ध है सरकार चाहे तो इन देशों में जाने वाले लोगों के खिलाफ आर्थिक अपराध दण्ड संहिता की विभिन्न धाराओं के अनुसार तुरन्त कार्यवाही कर सकती है। जैसे स्विटजरलैण्ड प्रतिवर्ष लगभग 80 हजार लोग जाते हैं इनमें से 25 हजार लोग एक वर्ष में कई बार जाते हैं आखिर क्यों ? उत्तर है इन्ही लोगों का वहाँ पैसा जमा है और ये भ्रष्ट लोग या तो सरकार में सम्मिलित हैं या सरकारों द्वारा संरक्षित हैं।
2. देश में जमा काले-धन को समाप्त करने के लिये एक बार छपे हुए नोट एक नीति के तहत वापस लेने से व उसके बदले नए नोट देकर व बड़े आर्थिक लेन-देन बैंकों के द्वारा करने से तथा एक समयावधि के बाद पुराने नोटों को एक्सपायर कर देने से काला धन, भ्रष्टाचार, नकली करेंसी एवं आतंकवाद चारों एक साथ मिट जायेंगे।

हमारी संस्कृति, परम्परा व कर्त्तव्य:-

जब रावण, कंस, महानन्द व अंग्रेज देश के लोगों पर अत्याचार करने लगे व माँ, बहन, बेटियों के साथ बलात्कार करने लगे, पाप, अनाचार, भय, भूख, अभाव, असुरक्षा व दरिद्रता से चारों ओर समाज में हाहाकार व चीत्कार हो रहा था तब भगवान् राम, भगवान् कृष्ण, आचार्य-चाणक्य व देश के क्रान्तिकारियों ने इन पापियों का अन्त किया था और सत्ता व व्यवस्था का परिवर्तन कर देश को संकट से बाहर निकालकर हमारे सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया था।

अत: आज पुन: मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम एवं योगेश्वर भगवान् श्री कृष्ण आदि की भूमिका में सत्ता व सम्पत्ति के प्रलोभन से मुक्त रहकर अपने पूर्वजों की भांति हमको ये सत्ता व व्यवस्था-परिवर्तन का कार्य करना है। यही हमारा धार्मिक, आध्यत्मिक, सामाजिक व राष्ट्रीय कर्त्तव्य है। सदियों के बाद ऐसा भागवत् मुहुर्त आता है जब थोड़ा सा प्रयास व पुरुषार्थ बहुत बड़ा फल देने वाला होता है। अत: आओ अब सब काम छोड़कर एक दो वर्ष इस काम में पूर्णरूप से या आंशिक रूप से समय (फुल टाईम या पार्ट टाईम) देकर लग जावो, इससे आपका व देश के 115 करोड़ से अधिक भारतीयों का युगों-युगों के लिए कल्याण हो जायेगा।

- पूर्ण पवित्रता अर्थात् आर्थिक व चारित्रिक शुचिता, पूर्ण भारतीयता अर्थात् स्वदेशी का पूर्ण आग्रह व विदेशी वस्तु व विचार का पूर्ण बहिष्कार तथा पूर्ण संगठित अनुशासित अर्थात् सब एक साथ मिलकर आगे बढ़ना यही है हमारी संस्कृति, मर्यादा या सिद्धान्त।
- जिस देश का राजा वैभवशाली वहाँ की प्रजा, गरीब, दरिद्र तथा जिस देश का राजा तपस्वी व सादगी से रहता है वहाँ की प्रजा वैभवशाली व सुखी रहती है।
- इस पूरे अभियान के मूल में योग, अध्यात्म, संस्कृति, सत्य, सेवा एवं भगवान् है। अत: व्यवस्था परिवर्तन के साथ-साथ हमें पूरी ईमानदारी से आत्मपरिवर्तन भी करना है। अपने भीतर की कमजोरी, दुर्बलताओं व समस्त पराधीनताओं से मुक्त होकर आत्मनिर्माण करते हुए सेवा व स्वकर्त्तव्य का पूरी ईमानदारी से पालन करते हुए एक आदर्श समाज, राष्ट्र व नये युग का निर्माण करना है।
- सत्ता व व्यवस्था-परिवर्तन का काम सदा उन्हीं महापुरुषों ने किया है जो सत्ता, सम्पत्ति व सिंहासन के प्रलोभन से मुक्त थे।
- व्यवस्था-परिवर्तन के महानायक हनुमान जी व अर्जुन आदि प्रारम्भ में निराश हुए और बाद में वही निराशा आशा, उत्साह व विजय में परिवर्तित हो गयी।
- टैक्स जस्टिस नेटवर्क व विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक संस्था विश्व बैंक (वर्ल्ड बैंक) के अनुसार अभी भी 1.6 ट्रिलियन डॉलर अर्थात् 72 लाख करोड़ रुपये स्विटजरलैण्ड सहित 60 देशों में प्रतिवर्ष कालाधन जमा हो रहा है तथा अब तक 11.5 ट्रिलियन डॉलर अर्थात् 516 लाख करोंड़ रुपये विदेशों (टैक्स हैवन कन्ट्रीज) में जमा है। और इसमें लगभग आधा भारत के कुछ भ्रष्ट व बेईमान लोगों का है तथा प्रतिवर्ष जमा हो रहे 72 लाख करोड़ रुपये में भी आधा धन विकासशील देशों का है और विकासशील देशों में सबसे बड़ा देश भारत ही है। काला धन जमा करने वाले इन भ्रष्ट लोगों की संख्या विश्व की कुल आबादी का 3 प्रतिशत है इन 3 प्रतिशत लोगों ने पूरी दुनियाँ में लूट मचाई हुई हैं व दुनियाँ के 97 प्रतिशत लोगों के जीवन को नर्क बनाया हुआ है। हमें भारत का लूटा हुआ धन देश में लाना है तथा प्रतिदिन व प्रतिवर्ष हो रही लूट से भारत को बचाकर इसे शक्तिशाली बनाना है।
- जैसे अपने घर में चोरी होने पर घर का बजट बिगड़ जाता है व पूरा घर कंगाली व बदहाली के दौर से गुजरता है वैसे ही राष्ट्र में देश का धन चुराकर कुछ चोर व बेईमान लोगों ने देश को दरिद्र, कंगाल व बदहाल करके देश को गरीब बनाया हुआ है और इसी से देश का पूरा बजट बिगड़ा हुआ है।
- सभी सजग, जागरूक व संवेदनशील देशभक्त भारतीयों की दिल से यह तमन्ना है कि देश की भ्रष्ट-व्यवस्था व भ्रष्टाचार, पाप, अपराध, असुरत्व एवं अधर्म अब तो मिटना ही चाहिये, बस दिक्कत एक ही है कि यह पंगा कौन मोल ले अथवा इस पाप व भ्रष्टाचार को मिटाने की जिम्मेदारी कौन ले? गाँव से लेकर देश तक यह जिम्मेदारी वही ले सकता है जिसको गाँव से लेकर पूरा देश जानता हो, साथ ही इज्जत भी करता हो और उसने देश की कोई बड़ी सेवा की हो, वह साहसी, निर्भय, निष्कलंक व बेदाग हो तथा इन भ्रष्टाचारियों को परास्त करने में समर्थ हो तथा उसके पास राष्ट्रव्यापी कोई बड़ा संगठन भी हो। ये सभी गुण एक साथ न तो किसी बड़े नेता, अभिनेता, खिलाड़ी या उद्योगपति मे दिखते हैं और न ही कहीं अन्यत्र किसी और में। इन समस्त गुणों से युक्त करके स्वयं भगवान् ने भारत माता को भ्रष्टाचार, बलात्कार व समस्त पापों से मुक्त करने के लिये सब गुण, शक्ति व सामर्थ्य से युक्त करके सम्पूर्ण भारतवासियों के श्रद्धा के केन्द्र परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज को इस धरती पर भेजा है और अब यह सत्ता व व्यवस्था-परिवर्तन तथा भ्रष्टाचार की समाप्ति का काम अवश्य पूरा होगा। भारत स्वाभिमान के राष्ट्र-व्यापी संगठन में गाँव व जिले-स्तर पर यह जिम्मेदारी हमें संभालनी होगी तथा राष्ट्र-स्तर पर इस आंदोलन का पूज्य स्वामी जी महाराज नेतृत्व करते हुए इसे सफल बनायेंगे।
- अधिकांश राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं का अंतिम लक्ष्य सत्ता व सम्पत्ति होता है लेकिन हमारे आध्यात्मिक व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का ध्येय सत्ता या सम्पत्ति नहीं अपितु सेवा है और यह आदर्श हमें सदा ध्यान में रखना है। अधिकांश राजनैतिक कार्यकर्त्ता चुनाव से दो महीने पहले कार्य करते हैं। किन्तु हमें प्रतिदिन कम से कम दो घण्टे सेवा करनी है तथा दो वर्ष तक घोर तप व पुरुषार्थ करके पूरे भारत को ''भारत स्वाभिमान'' से जोड़ना है।
- असुरत्व, मनुष्यत्व, देवत्व व अतिमानवत्व ये पृथक्-पृथक् योनियाँ नहीं अपितु हमारे चरित्र व आचरण के भिन्न-भिन्न स्तर हैं। हमें निम्न चेतना से निरन्तर मध्यम, उच्च व दैवी चेतना के शिखर पर आरोहण करना है।
- श्रेष्ठ व सात्विक कार्यकर्ता का लक्ष्य :-

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी, धृत्युत्साहसमन्वित:।
सिद्धियसिद्धयोर्निर्विकार: कर्त्ता सात्विक उच्यते ॥ *(गीता १८-२६)*

जो आसक्ति व अहंकार से मुक्त तथा धैर्य, उत्साह से युक्त साथ ही सफलता व असफलता में जो सम रहता है वह श्रेष्ठ व सात्विक कार्यकर्ता है।

मुख्यालय : भारत स्वाभिमान, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

फोन : ०१३३४-२४०००८, २४४१०७, २४६७३७ **फैक्स :** ०१३३४-२४४८०५, २४०६६४ E-mail : divyayoga@rediffmail.com

www.divyayoga.com, www.bharatswabhimantrust.org

नोट –

१. भारत स्वाभिमान आंदोलन के कार्यक्रमों, नीतियों, उद्देश्यों की तात्कालिक (करेण्ट) व अधिक जानकारी के लिए **"व्यवस्था परिवर्तन"** पत्रक व **"जीवन दर्शन"** पुस्तक पढ़ें तथा प्रतिदिन प्रात: ५ से ८ व सायंकाल ८ से ९.३० **आस्था चैनल** पर **तथा ९ से १० संस्कार चैनल पर ''योग व आयुर्वेद कार्यक्रम''** अवश्य देखें।

२. व्यवस्था-परिवर्तन तथा राष्ट्र-निर्माण के इस यज्ञ को आगे बढ़ाने के लिये इस पत्रक को राष्ट्रभाषा व अन्य भारतीय भाषाओं में छपवाकर दानस्वरूप वितरित कर सकते हैं तथा वितरक के रूप में अपना या अपने संस्थान का नाम प्रकाशित कर सकते हैं।